देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

Webinar Visheshank

Impact Factor 3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संत साहित्य : विविध आयाम विशेषांक

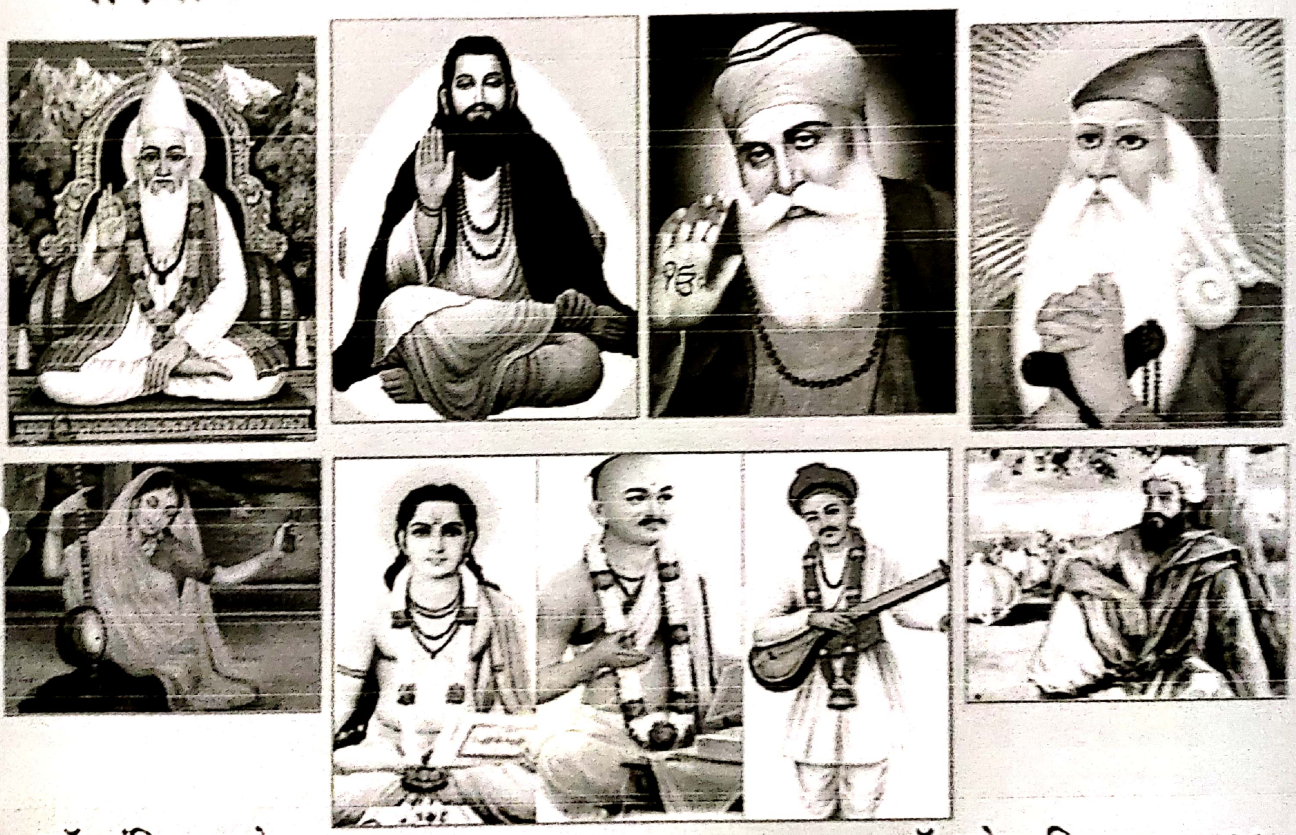

डॉ. पंडित बन्ने
प्रधान सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. ISSUE- (भारतीय संत साहित्य : विविध आयाम वेबीनार-विशेषांक) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. पंडित बन्जे

एम.ए. (हिन्दी), एम. फिल,
पीएच.डी. डी.लिट्
हिन्दी विभागाध्यक्ष
भारत महाविद्यालय, जेऊर
(म. रेल) सोलापुर (महाराष्ट्र)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

परामर्श मण्डल :

डॉ. इरेश स्वामी (महाराष्ट्र)
डॉ. अर्जुन चव्हाण (महाराष्ट्र)
डॉ. अनंत शिंगाडे (महाराष्ट्र)

सम्पादक मण्डल :

डॉ. नवनाथ गाडेकर,
प्रा. रमेश पाटील

सह सम्पादक :

डॉ. शिवाजी चवरे
डॉ. भाऊसाहेब नवले
डॉ. गंगाधर बिराजदार
डॉ. मनोहर भंडारे
डॉ. संघप्रकाश दुड्डे

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
भारतीय संत-साहित्य : विविध आयाम विशेषांक Page No. : 110-113
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संत परंपरा और संत साहित्य के महान हस्ताक्षर : संत कबीर

-डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे
दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत, जि. अहमदनगर

लगभग 13वीं सदी के बाद भारतीय महाद्वीप के उत्तरी भाग में संत मत से जुड़ा गुरूओं का एक संयोगी समुह था जिसे बहुत प्रसिद्धि मिली। संत परंपरा को मुख्यतः दो समुहों में बांटा जा सकता है : पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश क्षेत्र के संतो का उत्तरी समुह जिसने अपनी अभिव्यक्ति मुख्यतः बोलचाल वाली हिंदी में की और दक्षिणी समुह जिसकी भाषा पुरातन मराठी है और जिसका प्रतिनिधित्व नामदेव और महाराष्ट्र के अन्य संत करते है। भारतीय संत परंपरा में भारत के प्राचीन काल से आज तक के सभी संतो का नाम आता है। इश्वर ने अपनी बात को लोगों तक समझाने के लिए उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए, व्यक्ति का विकास कैसे हो उसके चिंतन, शरीर, धन, ज्ञान का विकास कैसे हो, उसके लिए एक प्रतिनिधि परंपरा का प्रारंभ किया।

आज हमें यह जानना होगा कि संत का सही स्वरूप क्या होता है, जब यह अपने ज्ञान द्वारा ईश्वर को समझ लेते है, अपनी भक्ति द्वारा ईश्वर को प्राप्त कर लेते है। संत स्वयं को केवल समाज के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए, केवल मानवता के लिए ही नही, किंतु संपूर्ण प्राणियों के लिए समर्पित कर सबके विकास को गति देते है।

जिस समय कबीर अविर्भूत हुए थे वह समय ही भक्ति की लहर का था। उस लहर को बढाने के प्रबल कारण भी प्रस्तुत थे। मुसलमानों के भारत में आ बसने से परिस्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन आ गया। हिंदू जनता का नैराश्य दूर करने के लिए भक्ति का आश्रय ग्रहण करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों ने हिंदू और मुसलमान भक्त संतों की परंपरा विरोधी जातियों को एक करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया। इस अनुभव के मूल में एक ऐसे सामान्य भक्तिमार्ग का विकास अपेक्षित था जिससे परमात्मा की एकता के आधार पर की एकता का प्रतिपादन हो सकता था और जिसका मूलाधार भारतीय अद्वैतवाद और मुसलमानों, एकेश्वरवाद के सूक्ष्मभेद की ओर ध्यान नहीं दिया गया और दोनों के एक विचित्र मिश्रण के रूप में निर्गुण भक्तिमार्ग चल पड़ा। "संत कवि निर्गुण ब्रम्ह के उपासक है। निर्गुण ब्रम्ह की यह भावना उन्होंने शंकराचार्य के ब्रम्हवाद में पायी है। यद्यापि उनमें से किसी ने भी विधिवत विद्याध्ययन कर शंकर वेदांत की शिक्षा नही पायी थी, फिर भी परंपरा से और वारकरी संतो से उन्होने निर्गुण भावना को अपनाया।"[1] रामानंदजी के बारह शिष्यों में से कुछ इस मार्ग के प्रवर्तन में प्रवृत्त हुए जिनमें से कबीर प्रमुख थे। शेष में सेना, धना, भवानंद, पीपा और रैदास थे, परंतु उनका इतना प्रभाव न पड़ा जितना कबीर का। नरहरीनंद जी ने अपने शिष्य गोस्वामी तुलसीदास को प्रेरित करके

Scanned with OKEN Scanner

कर्तृत्व से सगुण रामभक्ति का एक और ही स्रोत प्रवाहित कराया।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू समाज पर एक और प्रभाव पड़ा। पददलित शुद्रों की दृष्टि में उन्मेश हो गया। उन्होंने देखा कि मुसलमानों में शुद्रों का भेद नहीं है। सधर्मी होने के कारण वे सब एक है, उनके व्यवसाय ने उनमें कोई भेद नहीं डाला है, न उनमे कोई छोटा है, न कोई बड़ा। अतः इन ठुकराए हुए शुद्रों में से ही कुछ ऐसे महात्मा निकले जिन्होंने मनुष्यों की एकता को उद्घोषित करना चाहा। रामानंदजी ने सबके लिए भक्ति का मार्ग खोलकर उनको प्रोत्साहित किया। नामदेव दरजी, रैदास चमार, दादू धुनिया, कबीर जुलाहा आदि समाज की नीची श्रेणी के ही थे, परंतु उनका नाम आज तक आदर से लिया जाता है।

वर्णभेद से उत्पन्न उच्चता और नीचता को ही नही वर्गभेद से उत्पन्न उच्चता नीचता को भी दूर करने का इस निर्गुण भक्ति से प्रयत्न किया। जैसे कबीर कहते है "संतन जात न पूछो निरगुनियॉ।"[2] स्त्रियॉ भी पुरूषों के समान भक्ति की अधिकारिणी हुई। रामानंदजी के शिष्यों में से दो स्त्रियॉ थी, स्त्रियों को चारदीवारों के अंदर ही कैद रखने के कट्टर पक्षपाती तुलसीदासजी भी जो मीराबाई को उपदेश दे सके, वह निर्गुण भक्ति के ही अनिवार्य ओर अलक्ष्य प्रभाव के प्रसाद से समझना चाहिए। ज्ञानी संतो ने स्त्री की जो निंदा की है, वह दूसरी ही दृष्टि से है। स्त्री से उनका अभिप्राय स्त्री पुरूष के कामवासना पूर्ण संसर्ग से है। स्त्री की निंदा कबीर से बढकर कदाचित ही किसी ने की हो,

"कबीर माया पापणी, फंध ले बैठी हाटि।
सब जग तो फंधै पड्या गया कबीरा काटि।"[3]

इसके बावजूद भी पति पत्नी की भॉति न रहते हुए भी लोई का आजन्म उनके साथ रहना प्रसिद्ध है।

कबीर इस निर्गुण भक्ति प्रवाह के प्रवर्तक है, परंतु भक्त नामदेव इनसे भी पहले हो गए थे। नामदेव जी जाति के दर्जी थे ओर दक्षिण के सातारा जिले के नरसी वमनी नामक स्थान में उत्पन्न हुए थे। पंढरपूर में विठोबाजी का मंदिर है। ये उनके बड़े भक्त थे। पहले ये सगुणेपासक थे, परंतु आगे चलकर इनका झुकाव निर्गुण भक्ति की ओर हो गया। नामदेव के भगवान न मंदिर में है न मस्जिद में वे कहते है –

"हिंदू पूजे देहुरा मुसलमान मसीद,
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति।"[4]

कबीर के पीछे तो संतो की मानो बाढ सी आ गई और अनेक मत चल पड़े। पर सब पर कबीर का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। सभी ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा कर्मकांड का विरोध किया है, तथा जाति पॉति का भेदभाव मिटाने का प्रयत्न किया।

कबीर के जीवन चरित्र के संबंध में तथ्य की बाते बहुत कम ज्ञात है, यहॉ तक कि उनके जन्म ओर मृत्यु के संवतों के विषय में भी अब तक कोई निश्चित बातें नहीं ज्ञात हुई है। कबीर के विषय में लोगों ने जो कुछ लिखा है सब जनश्रुति के आधार पर है।

"चौदह सौ पचपन साल गए।
चन्द्रवार एक ठाठ ठए।।
जेठ सुदी बरसायत को।
पूरनमासी तिथि प्रगट भए।।"[5]

Scanned with OKEN Scanner

इनके अनुसार कबीर का जन्म सं. 1455 जेष्ठ शुक्ला पुर्णिमा चन्द्रवार को माना है। परंतु गणना करने से संवत् 1455 से जेष्ठ शुक्ल पुर्णिमा चंद्रवार को नही पड़ती। पद्य को ध्यान से पढने पर संवत् 1456 निकलता है, क्योंकि उसमें स्पष्ट शब्दों में लिखा है चौदह सौ पचपन साल गए अर्थात् उस समय तक संवत् 1455 बीत गया था। अतः 1456 यही संवत् कबीर के जन्म का ठीक संवत् जान पड़ता है।

काशी में एक विधवा ब्राह्मण कन्या को स्वामी जी के आशीर्वाद फलस्वरूप पुत्र उत्पन्न हुआ तो लोकलज्जा और लोकापवाद के भय से उसने उसे लहर तालाब के किनारे डाल दिया। भाग्यवश कुछ ही क्षण के पश्चात निरू तथा निमा जुलाहा दंपति वहॉ से निकले तो इनकी नजर बालक पर पड़ी इस पुत्र के लिए दोनों का मन लालायित हुआ और इस बालक को हृदय से लगाकर इसका पालन–पोषण किया।

कबीर के परिवार में कबीर के अतिरिक्त माता–पिता, पत्नी, पुत्र और पुत्री। कुछ लोगों का अनुमान है कि कबीर के दो स्त्रियॉ थी लोई और धनिया। 'धनिया' का नाम रमजनिया भी बताया जाता है।

कबीर के गुरू के संबंध में भी कई धारणायें है। रामानंद जी को इनका गुरू बताया है लेकिन डॉ. श्याम सुंदर दासजी की कबीर ग्रंथावली के अनुसार रामानंदजी का कबीर के गुरू होने का आधार कही भी नही हैं। परंतु किंवदंती झूठ होने के दृढ प्रमाण भी नहीं मिलते इसलिए रामानंदजी कबीर के गुरू थे, बिलकुल असत्य भी नही ठहरा सकते।

कबीर स्वतंत्र प्रकृति के थे। वे ये सोचते थे कि जिनका मन ही दासता की बेड़ियों से जकड़ा हो, वह पॉवो की जंजीरे क्या तोड़ सकेगा। समाज को अंधविश्वासों से मुक्त करने का प्रयास किया। मुसलमानों को रोजा, नमाज, हज, ताजिएदारी और हिंदूओं के श्राद्ध, एकादशी, तीर्थव्रत, मंदिर सबका उन्होंने विरोध किया है। इस बाहरी पाखंड के लिए उन्होंने हिंदु मुसलमान दोनों को खूब फटकारा है। उन्होंने किसी नामधारी धर्म के बंधन में अपने आपको नहीं डाला और स्पष्ट कह दिया है कि मैं न हिंदू हूँ न मुसलमान। उनका मानना है कि इस बाहरी आडंबर को दूर करने से धर्मभेद के समस्त झगड़े दूर हो जाते है। छूआछूत का उन्होंने विरोध किया है। उनका मानना है कि जन्म से ही कोई शुद्र अथवा हिंदू मुसलमान नही हो सकता उन्होंने कहा है –

जौ तूँ बॉभन बंभनी जाया। तो आन वाह है, क्यों नहीं आया।
जौ तूँ तुरक तुरकनी जाया। तो भीतर खतना क्यों न कराया।"[6]

व्यवसाय से कोई भी इंसान उच्च और नीच नही हो सकता। वे परिश्रम का महत्व जानते थे और अपनी आजीविका के लिए अपनी मेहनत पर विश्वास कर जीवन भर जूलाहे का व्यवसाय करते रहे। लेकिन वे सिर्फ आजीविकाभर के लिए ही व्यवसाय करते ये धन, संपत्ति जोड़ना वे उचित नहीं समझते थे। उन्होंने थोडे में ही संतोष करने का उपदेश दिया है। जो कुछ वे दिन भर में कमाते थे उसका कुछ अंश अवश्य साधु–संतो की सेवा में लगाते थे।

कबीर पहुँचे हुए ज्ञानी, बहुश्रुत थे उनका ज्ञान पोथियो से चुराई हुई सामग्री नही थी और न वह सुनी सुनाई बातों का बेमेल भंडार ही था। वे पढे लिखे तो थे नहीं। सत्संग, वेदांत, उपनिषदो और पौराणिक कथाओं का थोड़ा बहुत ज्ञान उनको हो गया था।

कबीर रहस्यवादी कवि थे। रहस्यवाद के मूल में अज्ञात शक्ति की जिज्ञासा काम करती है। जिज्ञासु जब ज्ञानी की कोटि पर पहुँचकर कवि होना चाहता है तब वह रहस्यवाद की ओर झूकता है।

Scanned with OKEN Scanner

कबीर स्वभाव से फक्कड़ थे। अच्छा हो या बुरा, सच हो या झूठ वे अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा, सच को सच और झूठ को झूठ कहनेवालो में से थे। कोई अपना कोई पराया नही देखते थे कोई मोह माया उन्हे अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी। वे सिर से पैर तक मस्त मौला थे। कबीर जैसे फक्कड़ को दुनियां की होशियारी से क्या मतलब? वे प्रेम के मतवाले थे मगर वे खुद को उन दिवानों में नही गिनते थे जो माशुक के लिए सिर पर कफन बॉधे फिरते है, जहॉ गगरी भरी है उसमें छलकन कहॉ?

"हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आजाद या जग मे, हमन दुनिया से यारी क्या।
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर–ब–दर फिरते।
हमारा यार है हम में हमन को इंतजारी क्या।"

इसलिए वे किसी के धोखे में आने वाले न थे। दिल जम गया तो ठीक है नहीं तो उस जगह पर नहीं रूकते। कबीर का जीवन अंधविश्वासों का विरोध करने में ही बीता था और समाज में अंधविश्वास यह था कि काशी में मरने से मोक्ष मिलता है और यही अंधविश्वास का विरोध करने के लिए कबीर मरने के लिए काशी छोड़कर मगहर चले गये और उनकी मृत्यु मगहर में हुई।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत : हम कह सकते है कि अपनी बात को लोगों तक पहुँचाने के लिए ईश्वर ने बनाई हुई प्रतिनिधि संत परंपरा है। ये संत इश्वर की बात को समझकर अपनी भक्ति द्वारा इश्वर को प्राप्त कर लेते है और विश्व की सभी प्राणिमात्राओं के लिए स्वयं को समर्पित कर देते है। हम देखते है कि जिस प्रकार कबीर ने अपना घर द्वार उजाड़कर समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा मिटाकर समाज सुधार के लिए खुद को समर्पित किया है। समाज में व्याप्त वर्णभेद ही नहीं वर्गभेद को भी मिटाने का प्रयास निर्गुण भक्ति से किया है और इस निर्गुण भक्ति प्रवाह के प्रवर्तक कबीर है। कबीर ने हिंदू तथा मुसलमान में व्याप्त पाखंड को दूर करने का प्रयास किया। दोनों को खूब फटकारा। कबीर परिश्रम का महत्व जानते थे मेहनत पर विश्वास करते रहे और सिर्फ आजीविका भर के लिए ही व्यवसाय करते थे। उन्होंने धन संचय कभी नहीं किया जो कमाते उसका कुछ अंश संतों में बॉटते। कबीर को कोई मोह माया विचलित नहीं कर सकती थी। वे किसी के धोखे में आने वाले न थे। दिल जम गया तो ठीक नहीं तो राम–राम करके आगे चल देते। कबीर पढे–लिखे नही थे लेकिन फिर भी उन्होंने समाज के सामने एक नया आदर्श रखा। अतः भारतीय साहित्य के महान हस्ताक्षर 'कबीर' ऐसा हम कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. ईश्वरदत्त शील – हिंदी साहित्य का मध्यकाल, पृष्ठ – 55 संस्करण–द्वितीय, 2013.
2. वही – पृष्ठ – 59.
3. डॉ. श्यामसुंदर दास – कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ – 25 संस्करण – प्रथम, 2015.
4. www. sahitya.acadamy gov.in
5. डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र–कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ – 2 संस्करण – षष्ठ, 1992.
6. डॉ. श्यामसुंदर दास – कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ– 35 संस्करण – प्रथम, 2015.
7. विनयेन्द्र स्नातक – कबीर, पृष्ठ – 48 संस्करण – छठा –1993.

मो.8888410904

Scanned with OKEN Scanner